ताओ और कनफ्यूश ९
कहता है ?
ताओ और कनफ्यूश क्या कहता है ? 9.4
श्रीकृष्ण दत्त भट्ट

ताओ और कनफ्यूश धर्म क्या कहता है ?

श्रीकृष्णदत्त भट्ट

सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी

प्रकाशक : मन्त्री, सर्व-सेवा-संघ,
राजघाट, वाराणसी

संस्करण : प्रथम : दिसम्बर, १९६३ : ३,०००
द्वितीय : फरवरी, १९६५ : ५,०००

कुल प्रतियाँ : ८,०००

मुद्रक : नरेन्द्र भार्गव,
भार्गव भूषण प्रेस,
गायघाट, वाराणसी

मूल्य : ६० पैसे

Title : TAO AUR KANFYUSHA DHARMA KYA KAHATA HAI ?
Author : Shrikrishna Datta Bhatta
Subject : Religion
Publisher : Secretary,
Sarva Seva Sangh,
Rajghat, Varanasi
Edition : Second
Copies : 5,000; February, 1965
Total Copies : 8,000
Price : 60 Paise

प्रकाशकीय

चीनमें मुख्य रूपसे तीन धर्म प्रचलित हैं : बौद्ध धर्म, ताओ धर्म और कनफ्यूश धर्म। अन्य धर्मोंकी भाँति इन तीनों धर्मोंके मूलमें भी एक ही प्रेरणा है—सत्य, प्रेम और करुणा।

हमारी 'धर्म क्या कहता है?'—पुस्तक-मालाकी यह नवीं पुस्तक है—'ताओ और कनफ्यूश धर्म क्या कहता है?' इसमें चीनमें विकसित होनेवाले इन दोनों धर्मोंका परिचय देते हुए बताया गया है कि मानव जीवनकी सफलता युद्धमें नहीं, शान्तिमें है। भोगमें नहीं, त्यागमें है। लाओत्से, कांगफ्यूत्सी, मेनशियस और मोत्सू—सभीने इस बातपर जोर दिया है कि धर्मका मूलतत्त्व है—प्रेम और मैत्री।

धन्य हो उठेगा हमारा जीवन, जब हम धर्मके इस मूल तत्त्वको समझकर अपने दैनिक जीवनमें उसका अमल शुरू कर देंगे।

अनुक्रम

(१) चीनके धर्म ५–६
(२) ताओ धर्म क्या कहता है ? ७

१. लाओत्से ८–११
२. ताओ धर्म १२–१५
३. ताओ तेह किंगमें कहा है १६–३३

१. ताओ १६, २. तेह १९, ३. परम धर्म २०, ४. आँख कान मुँह बन्द करो २३, ५. शान्तिमें ही सुख २४, ६. ज्ञानी कैसा होता है ? २६, ७. सच्ची सरकार ३०, ८. युद्ध करना गलत है ३१, ९. लड़ाई मिटानेका धर्म ३३ ।

४. च्युअंगत्सीने कहा है ३४–४०

१. मान-अपमानको समान मानो ३५, २. अपने गुणोंका विकास करो ३६, ३. पैसेवालों की दुर्दशाएँ ३७, ४. गरीबीकी मस्ती ३९ ।

(३) कनफ्यूश धर्म क्या कहता है ? ४१

१. कांगफ्यूत्सी ४२–४६
२. कनफ्यूश धर्म ४७–४७
३. कांगफ्यूत्सीने कहा है ४९–६०

१. सबसे प्रेम करो ४९, २. सचाईका पालन करो ५०, ३. पहले अपना सुधार, फिर दूसरोंका ५१, ४. महान् पुरुष कौन है ? ५२, ५. बुद्धिमान् वह है ५३, ६. लायक बेटा कौन ? ५३, ७. तीन तरहकी मित्रता ५५, ८. मनुष्य दुःखी क्यों है ? ५५, ९. जीवनका आनन्द किसमें ? ५६, १०. परिवारमें प्रेम फैलाओ ५६, ११. पाँच सद्गुण ५७, १२. पाँच कर्तव्य ५७, १३. अच्छी सरकार ५८, १४. नादानको दण्ड देना गलत ५९, १५. युद्ध बुरी चीज है ६० ।

४. मेनशियसने कहा है ६१–६२

पापोंसे अपनेको बचाओ ६२, पाँच पाप ६२ ।

५. मोत्सूने कहा है ६३–६४

प्रेम ही एक उपाय ६३ ।

एक तरफ प्रशान्त महासागर, दूसरी तरफ गोबीका रेगिस्तान। उधर साइबेरिया, इधर हिमालय, तिब्बत, बर्मा।

इन सबके बीचमें, समुद्र, रेगिस्तान और पहाड़ोंके बीचमें बसा है एशियाका एक बहुत बड़ा देश। नाम है उसका : चीन।

सारे संसारमें जितने आदमी रहते हैं, उसके एक चौथाई से ज्यादा आदमी चीनमें रहते हैं।

चीनके धर्म

कुछ लोगोंका कहना है कि चीनमें कोई धर्म ही नहीं है, वहाँ केवल आचार पद्धति है। यह ठीक है कि चीनमें आचारको बहुत महत्त्व दिया जाता है, फिर भी चीनमें तीन धर्म प्रचलित हैं :

ताओ जिआओ : ताओ धर्म। तर्क-संगत धर्म। लाओत्सेका धर्म।

यू जिआओ : विद्वानों और पण्डितोंका धर्म। कांगफ्यूत्सीका, कनफ्यूशियसका धर्म।

शी जिआओ : बौद्ध धर्म। भगवान् बुद्धका धर्म।

बौद्धधर्म तो भारतसे चीनमें पहुंचा है। शेष दोनों धर्म चीनमें

ही जनमे हैं, चीनमें ही विकसित हुए हैं। यों उन्हें पंथ कहना अच्छा होगा, पर आज तो उन्होंने धर्मका ही रूप ले लिया है।

१. ताओ धर्म

ताओ धर्ममें सबसे अधिक जोर दिया जाता है ताओपर। कैसा है वह ताओ ?

महान् ताओ सर्वव्यापी है।
वह इस पार भी है, उस पार भी।
सारे जीव उसीसे जीते हैं।
वह सबकी खोज-खबर लेता रहता है।
कार्य भी वही करता है, पूरा भी वही करता है।
पर, उसके फलको छूता तक नहीं।
प्रेमसे वह सबको लपेटे रहता है।
प्रेमसे वह सबका पोषण करता है।
पर, अपनेमें श्रेष्ठताकी गंध भी नहीं आने देता।
उसे कोई महत्त्वाकांक्षा नहीं। कोई इच्छा नहीं।

२. कनफ्यूश धर्म

कनफ्यूश धर्मका बुनियादी सिद्धान्त है :
हृदयमें सत्य होगा तो चरित्र सुन्दर होगा।
चरित्र सुन्दर होगा तो घरमें प्रेम होगा।
घरमें प्रेम होगा तो राष्ट्रमें व्यवस्था होगी।
राष्ट्रमें व्यवस्था होगी तो सारी दुनियामें शान्ति होगी।

लड़ो मत, झगड़ो मत, सबसे प्रेम करो—यही है चीनके धर्मोंका निचोड़।

आइये, हम इन धर्मोंकी हलकी-सी झांकी करें।

ताओ धर्म क्या कहता है ?

'जो लोग मेरे प्रति अच्छा व्यवहार करते हैं,
उनके प्रति मैं अच्छा व्यवहार करता हूँ।
जो लोग मेरे प्रति अच्छा व्यवहार नहीं करते,
उनके प्रति भी मैं अच्छा व्यवहार करता हूँ।
इस तरह सब लोग अच्छे बनते हैं।'

—लाओत्से

: १ :

लाओत्से

'गुरुजी, आप कहाँ जा रहे हैं ?'

'बेटा, मेरी तबीयत ऊब गयी है। राज्य में राजनीतिज्ञ लोग षड्यंत्र रच रहे हैं, तरह-तरह के कपट प्रबन्ध किये जा रहे हैं, भ्रष्टाचार फैला है, यह मुझसे देखा नहीं जाता। इसीलिए सब कुछ छोड़-कर मैं जा रहा हूँ एकान्तमें। कहीं दूर जाकर चिन्तन-मननमें जीवनके अन्तिम दिन बिताने।'

'आपके चले जानेपर हमें उपदेश कौन देगा गुरुजी ? हम रास्ता भूलेंगे तो हमें रास्ता कौन दिखायेगा ?'

'मुझे अब यहाँ एक क्षण भी रुकना पसन्द नहीं बेटा। मैं अब राज्य छोड़कर चला ही जाना चाहता हूँ।
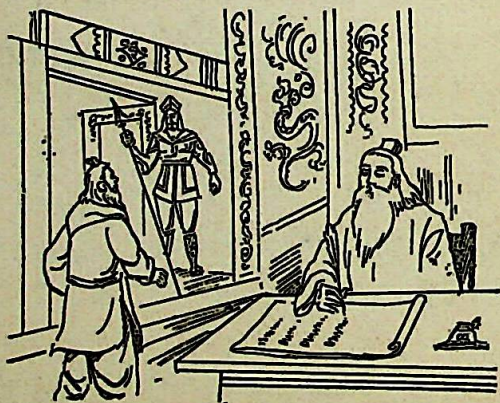
'पर हमारी बात भी तो सोचिये, गुरुजी। हमें भी तो कुछ सहारा चाहिए। इस क्वानियन दर्रेसे मैं आपकोत भी बाहर जाने दूँगा, जव आप हमें कुछ उपदेश लिखकर दे जायेंगे!'

द्वारपाल अड़ गया। प्रेमका आग्रह टाला नहीं जा सका।

लाओत्सेने उसे ४६६ वचन लिखकर दे दिये।

पाँच हजार शब्दोंकी छोटी-सी यह किताव—"ताओ तेह किंग" ताओ धर्ममें उपनिषद्की तरह पूजी जाती है।

विनोबाका एक सूत्र है: 'कृति रहे, पर कर्ता न रहे!'

यह है पूर्ण निरहंकारिताका लक्षण।

लाओत्सेकी कृति तो अमर है, पर कर्ताका पता ही नहीं चलता। उसके जीवनकी, उसके कार्योंकी लोगोंको ठीक-ठीक जानकारी नहीं है। प्रामाणिक विवरण बहुत कम मिलता है।

ऐसा था निरहंकारी लाओत्से।

'लाओत्से' शब्दका अर्थ होता है—'बूढ़ा वालक!'

सचमुच वह 'बूढ़ा बालक' ही था।

बूढ़ा होनेपर भी बालककी तरह सरल, सीधा, निष्कपट। कहता भी था वह:

'जो मूर्तिमान धर्म बन गया, वह छोटे बच्चेकी तरह ही हो जाता है।

बिच्छू उसे डँसता नहीं।

जंगली पशु उसपर झपटते नहीं।

खंख्वार पक्षी उसे चोंच नहीं मारते।'

जन्म और बचपन

भारतमें जिस समय भगवान महावीर और भगवान बुद्ध हुए उसी समय चीनमें लाओत्सेका जन्म हुआ। आजसे ढाई हजार साल

पहले ईसापूर्व ६०४ में चीनके त्च्यू प्रदेशमें, चूझ्रेनमें वह पैदा हुआ।

वचपनका उसका नाम था 'ली'।

'ली' कहते हैं बेरको।

बेरके पेड़के नीचे उसका जन्म हुआ। इसीसे नाम पड़ा 'ली'।

कहते हैं कि पैदा होते समय लाओत्सेके बाल सफेद थे। लोगोंको लगा कि वच्चा जन्मसे ही असाधारण बुद्धिवाला है।

धीरे-धीरे वह बड़ा हुआ।

सरकारी नौकरी

चालीस साल बीतनेके बाद लाओत्सेको 'काओ' के सरकारी गुप्त-रेकार्डके रक्षककी नौकरी मिली। वह निर्लिप्त भावसे अपने काममें लगा रहा।

लाओत्से निवृत्तिमार्गी था। ध्यान, चिन्तन और मनन उसका स्वभाव था। लोग उसे साधु-महात्माके रूपमें जानने लगे।

कांगफ्यूत्सीसे मुलाकात

लाओत्से जब, ८७ सालका था, तब एक दिन कांगफ्यूत्सी (कन-फ्यूशियस) से उसकी मुलाकात हुई, जो उस समय ३३ सालका ही था, फिर भी धर्मपुरुषके रूपमें प्रसिद्ध था। दोनों महापुरुषोंकी यह मुलाकात बड़ी महत्त्वपूर्ण थी।

लाओत्सेकी बातोंसे कांगफ्यूत्सी बहुत प्रभावित हुआ। लाओत्से-की ज्ञाननिष्ठाकी उसपर अच्छी छाप पड़ी।

राज्यका त्याग

लाओत्से सीधा सरल व्यक्ति था। दंद-फंद उसे सुहाते नहीं थे। जब चीनमें राजनीतिज्ञोंके दाँव-पेंच बहुत बढ़ चले, तो लाओत्सेको बड़ी विरक्ति हुई। वह राज्य छोड़कर चल दिया।

भला हो क्वानियन दर्रेके द्वारपालका। उसके आग्रहसे हमें लाओत्सेसे 'ताओ तेह किंग' जैसी अमर रचना प्राप्त हो गयी। उसने बैठे-बैठे ही यह छोटी-सी पुस्तक लिखकर दे दी।

उसके बाद लाओत्से कहाँ चला गया, इसका कोई पता नहीं।

पर उसकी यह छोटी-सी रचना युग-युग तक अमर रहेगी और विश्वको प्रेरणा देती रहेगी। ●

: २ :

ताओ धर्म

लाओत्सेने जिस धर्मको जन्म दिया, उसका नाम है—ताओ धर्म। उसमें ताओपर सबसे ज्यादा जोर दिया गया है।

ताओ

'ताओ' शब्द बहुत गूढ़ है। ताओ परब्रह्म है, विश्वका मूल है, स्वयंसिद्ध है। असीम है, अनादि है। उसे ग्रहण करना, उसका चिन्तन करना कठिन है। उसका कोई नाम नहीं। उसका कोई रूप नहीं। वह सबमें है, सबसे ऊपर है।

विनोबाने भगवान्के नामोंकी जो माला बनायी है, उसमें 'रहीम ताओ तू' भी रखा है। वे मानते हैं कि रहीम जितना दयालु है, ताओ उतना ही तटस्थ। भरपूर दयाके लिए तटस्थ होना जरूरी है।

विनोबाके मतसे 'ताओ' शब्द बना है 'तन्' धातु से। 'तनु-विस्तारे' से ताओ बना है। उसका अर्थ है, सब जगह व्याप्त रहनेवाला तत्त्व। यह 'तन्' धातु किसी-न-किसी रूपमें संसारकी सारी भाषाओंमें मौजूद है। ॐकारके जैसे अनेक अर्थ हो सकते हैं, उसी तरह ताओके भी। ताओ माने विश्वव्यापक परमात्मा। वह बाहर-भीतर, आगे-पीछे, ऊपर-नीचे सर्वत्र समानरूप से भरा है।

तेह

'तेह' कहते हैं, ताओको पानेका सहज मार्ग।

तेहमें जीवन है, प्रेम है, प्रकाश है, इच्छा है। ताओको पानेके

लिए यही मार्ग पकड़नेकी बात कही गयी है। पर मार्ग पकड़ना भी कैसे कहा जाय ? जान-बूझकर कुछ करना ताओ धर्ममें गलत माना गया है। ज्ञानी कुछ करता नहीं। सब काम अपने-आप होते चलते हैं।

फूल कहीं सुगंध बिखेरने जाता है ? सुगंध तो अपने-आप बिखरती है। ताओको पानेवाले ज्ञानीके सद्‌गुण अपने-आप उसकी खुशबू फैलाते हैं। वे गुण अपने-आप विकसित होते हैं। सहज भाव से। जैसे फूलोंकी खुशबू, जैसे सूरजकी रोशनी, जैसे चन्दाकी चाँदनी।

बूवी

तेहमें सभी सद्‌गुण आते हैं। उसे कहते हैं बूवी। बूवी में कुछ भी करना नहीं होता। कोई वासना नहीं। कोई इच्छा नहीं। कोई कामना नहीं। शान्ति, शान्ति, परम शान्ति।

और ऐसा आदमी जिसे कुछ नहीं करना है, वह मुँह भी बन्द रखेगा, आँख भी बन्द रखेगा, कान भी बन्द रखेगा :

लब बिबन्दो चश्मे बन्दो गोश बन्द !

मैं कुछ नहीं करता। जो कुछ होता है अपने-आप होता है। सहज भावसे होता है। अकर्मकी यह वही स्थिति है, जिसका गीतामें वर्णन है। काम सब हो रहे हैं, पर सहज भावसे हो रहे हैं। कोई झिकझिक नहीं। कोई परेशानी नहीं। और जब कोई वासना ही नहीं, कोई कामना ही नहीं, तो फलकी चिन्ता ही क्या ? भला या बुरा जो भी, जैसा भी फल मिले, सिर आंखोंपर।

तेरे काँटोंसे भी प्यार, तेरे फूलोंसे भी प्यार !

सरलता

ऐसे धर्मका पालन करनेवाला सरल होगा ही। उसे न धन

चाहिए, न मान। न पद चाहिए, न प्रतिष्ठा। वैभवको, पदप्रतिष्ठाको, सम्मानको वह ठुकराता है। परिग्रहको वह गलत मानता है। गरीबी ही उसका भूषण है। वह मानता है कि धन-सम्पत्ति, मान-प्रतिष्ठाके पीछे दौड़ना मूर्खता है। मूर्ख लोग ही इन सब चीजोंके पीछे दौड़कर पग-पगपर ठोकर खाते हैं।

प्रेम

प्रकृतिका सहज नियम है—प्रेम। सारे दुःखोंका मूल है, प्रेमका अभाव। ताओ धर्ममें प्रेमके सहज मार्गको अपनानेकी बात कही गयी है। नम्रता और प्रेमको ही ज्ञान और आनन्दका मार्ग बताया गया है। जो अपने साथ प्रेम करे, उससे तो प्रेम करना ही चाहिए; पर यहाँ तो उससे भी प्रेम करना है, जो अपने से प्रेम नहीं करता। अच्छेके साथ ही नहीं, बुरेके साथ भी अच्छा वर्ताव करना है। तभी तो बुरा भी अच्छा बन सकेगा।

युद्धका विरोध

ताओ धर्ममें युद्धको गलत माना है। खून वहानेकी, रक्तपात करनेकी निन्दा की गयी है। शस्त्रोंका विरोध किया गया है। सेनाका विरोध किया गया है। कहा है कि युद्ध सारी बुराइयोंकी जड़ है। सेना दुःख और दुर्भाग्य की निशानी है। वह जहाँसे होकर एकवार गुजर जाती है, वहाँ तवाही छोड़ जाती है। जो आदमी खून देखकर खुश होता है वह भी भला कोई आदमी है !

धर्मग्रन्थ

ताओ धर्मका मूल धर्मग्रन्थ है, लाओत्सेका 'ताओ तेह किंग'। छोटा-सा ग्रन्थ है, पर उसकी महिमा अपार है। स्झीमा, लीहत्सी, च्युअंगत्सी, हंगफेइ, हू वेनेनत्सी जैसे कितने ही लोगोंने उसका भाष्य

किया है। उसपर टीकाएँ लिखी हैं। जब ये टीकाएँ फैलीं, तो लोगोंको लगा कि इस छोटे-से ग्रन्थमें तो रत्न-ही-रत्न भरे पड़े हैं।

ईसासे तीन शताब्दी पहले चीनके 'हन' वंशी राजाओंके जमानेमें ताओ धर्म खूब फैला। ईसासे १५६ साल पहले सरकारी आज्ञा निकली कि राज दरबारोंमें लाओत्सेके विचारोंका अध्ययन हो। 'ताओ-तेह' को आदर मिला। उसके साथ आदरसूचक विशेषण जोड़ दिया गया : 'किंग'। ताओ तेह किंग !

जीवनके दो पहलू

ताओ धर्ममें ऐसा माना जाता है कि प्रकृतिके दो पहलू हैं : यिन और यांग।

भला और बुरा, प्रकाश और अन्धकार, गर्मी और सर्दी, पुरुष और स्त्री। ये दोनों पक्ष मिलकर ही पूर्णता आती है। दोनों एक-दूसरेके विरोधी नहीं हैं, पूरक हैं।

प्रकृतिके ये दोनों पहलू जीवनके दो पहलू हैं। दोनोंको मिलाकर ही जीवन पूर्ण होता है। एककी कमी दूसरेसे पूरी होती है। दोनों मिलकर एक हो जाते हैं और सारी विषमता समाप्त हो जाती है। पहिएके दोनों धुरे मिलकर घूमते हैं, तो एक ही मालूम होते हैं।

इसी तरह सारी मानव-जाति एक है। ऊपरका भेद नगण्य है। भीतर तो सबमें एक ही तत्त्व लबालब भरा पड़ा है।
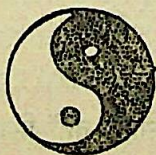
ताओ धर्म का यह प्रतीक इसी बातकी ओर इशारा करता है।

: ३ :

ताओ तेह किंगमें कहा है

ताओ

: १ :

अकथनीय

वाणीसे जो 'ताओ' कहनेमें आता है, सचमुच वह 'ताओ' नहीं है।
(ताओ अनुभवकी चीज है, कहनेकी नहीं।)
जिस गुणका नाम लिया जा सके, वह उसका सही लक्षण नहीं है।
पृथ्वी और स्वर्गसे पहले जो था, वह 'अव्यक्त' है।[१]

असीम और अनादि

ताओ असीम है।
उसीकी अगाधतासे सब कुछ पैदा होता है।
वह कोनेदार चीजको गोल बनाता है।
वह मेल-मिलावटसे व्यवस्था खड़ी करता है।
वह चमकनेवाली चीजको अपने तेजसे चौंधिया देता है।
वह अनासक्त होता है।
कोई नहीं जानता कि वह किससे पैदा हुआ।
वह ईश्वरसे भी पुराना है।[२]

अग्राह्य और अचिन्त्य

ताओ अग्राह्य है। उसे ग्रहण नहीं किया जा सकता।

१, २. ताओ उपनिषद् १ : ४

ताओ अचिन्त्य है। उसका ठीक-ठीक चिन्तन नहीं हो सकता।
उस अग्राह्य और अचिन्त्य ताओका अनुसरण ही महान् धर्म है।
वह अग्राह्य, अचिन्त्य है, फिर भी उसका आकार है।
वह अग्राह्य अचिन्त्य है, फिर भी उसमें सभी वस्तुएँ समायी हैं।
वह अनादिकालसे है, फिर भी उसका स्वभाव ज्यों-का-त्यों है।
वह सभी चीजोंका आदिकारण है।
उसे मैं कैसे जानूं ?
ताओसे मुझे उसका ज्ञान होता है ? [१]

अनाम और सरल

स्वयंसिद्ध ताओ अनाम है। उसका कोई नाम नहीं है।

उसकी मौलिक सरलता साधारण है, फिर भी दुनिया उसमें ओछेपनकी कल्पना नहीं करती।

प्रशंसाको वह दूरसे ही टालता जायगा।

सम्मानकी वह जड़ काट देगा।

समुद्र और नदियोंके लिए जैसे घाटियाँ हैं, वैसे ही दुनियाके लिए ताओ है। [२]

पूर्ण है यह, पूर्ण है वह

महान् ताओ सर्वव्यापी है।
एक ही समय वह इस पार रहता है, उस पार भी।
सारे जीव उसीके कारण जीते हैं।
वही सबकी खोज खबर लेता है।
वही कार्य करता है। वही पूर्णता तक पहुंचाता है।
फल वह छूता तक नहीं।

१, २. ताओ उपनिषद् २१; ३२।

प्रेमसे वह सबका पोषण करता है।
ऐसा करनेमें वह श्रेष्ठताकी गंध भी नहीं आने देता।
उसे महत्त्वाकांक्षा नहीं, किसी तरहकी कामना नहीं।[१]

रहस्यमय

ज्ञानी पुरुष ताओ सुनता है, तो उसके पीछे चलता है।

साधारण आदमी ताओ सुनता है, तो कुछ देर उसका सहारा लेता है, फिर छोड़कर चल देता है।

मूढ व्यक्ति ताओ सुनता है, तो सिर्फ उसकी हँसी उड़ाता है।

हँसी न उड़ती, तो कोई उसे ताओ कहता कैसे ?[२]

ताओकी रीति

आसक्ति छोड़कर काम करना,
बिना प्रपंच बढ़ाये सदा मगन रहना,
छोटेमें बड़ा देखना, थोड़ेमें अधिक,
आघातके बदले दया करना,

१, २. ताओ उपनिषद् ३४; ४१
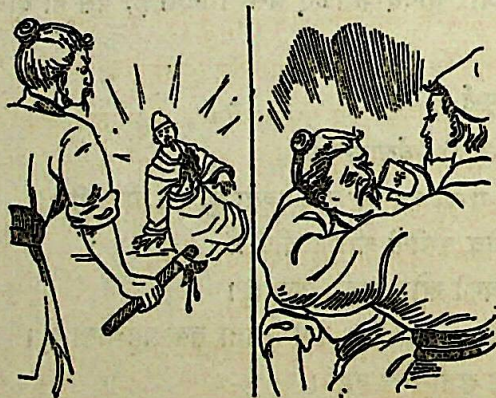
कठिन काम जब सरल रहे तभी पूरा कर लेना,
बड़ा काम पहले ही पूरा कर लेना—
यह है ताओकी रीति।[१]

तीन कीमती चीजें

मैं तीन अनमोल चीजोंसे चिपका रहता हूँ:
पहली चीज है, मार्दव।
दूसरी चीज है, परिमितता।
तीसरी चीज है, विनयशीलता।
मार्दवसे मैं धीर रह सकता हूँ।
परिमिततासे मैं उदार रह सकता हूँ।
विनयसे मैं जहाजकी तरह बहुत सेवा कर सकता हूँ।[२]

तेह : २ :

ताओ पुरुष है, ताओ पैदा करता है।
तेह प्रकृति है, तेह पोषण करती है।
सब चीजोंका भिन्न-भिन्न आकार होता है।
प्राकृतिक शक्ति उन्हें पूर्णावस्थातक पहुँचाती है।
ताओ सभी वस्तुएँ बनाता है।
तेह उन्हें पालती है, उनका पोषण करती है।
बिना कर्तापनके अभिमानके पैदा करना,
बिना आसक्ति रखे काम करना,
बिना लाभका ध्यान रखे बढ़ाना—
यह है उदात्त धर्म।[३]

१, २, ३. ताओ उपनिषद ६३: ६७: ५१

परम धर्म

: ३ :

निर्माण और संरक्षण करना,
कर्तापनका अहंकार न करते हुए कर्म करना,
कर्म करके फलकी आशा न रखना,
बिना विनाशके विकसित होना—
इसे कहते हैं परम धर्म ।[१]

धर्मका रहस्य

जो दूसरोंको जानता है, वह सयाना है।
जो अपने-आपको जानता है, वह अन्तर्ज्ञानी है।
जो दूसरोंको जीतता है, वह समर्थ है।
जो अपने-आपको जीतता है, वह परम समर्थ है।
जो संतुष्ट है, वह श्रीमान् है।
जो तेजीसे चलता है, वह मंजिलपर पहुँचता है।
जो अपनी जगहपर है, स्वस्थ है, वह सुरक्षित है।
जिसने 'ज्यों की त्यों धरि दीन्ही चदरिया', वह सुखी है।[२]

सच्चा धर्माचरण

शुद्ध धर्माचरणपर 'धर्माचरण' की मुहर नहीं होती।
वही उसकी धर्मशीलता है।
गौण धर्माचरणपर धर्मकी छाप रहती है।
शुद्ध धर्माचरण स्वाभाविक होता है।
गौण धर्माचरण दाँव-पेंचवाला होता है।
धर्म लुप्त होता है तो परोपकार-बुद्धि आती है।

१,२. ताओ उपनिषद १०; ३३

परोपकार-बुद्धि लुप्त होती है तो न्यायबुद्धि आती है।
न्यायबुद्धि लुप्त होती है, तो मौका साधनेकी कला आती है।
किन्तु वह तो झूठी नकल है धर्माचरण की।
वह तो परछांही है सत्यकी।
ज्ञानी सत्यका पल्ला पकड़ता है, दिखावटका नहीं।[1]

धनके पीछे मत लगो

धनके पीछे सदैव लगे रहनेसे अच्छा है, उससे विरत होना। चाहे, जैसी स्थायी चीज हो, रात-दिन घिसते रहनेसे वह भी घिस जाती है।
घर, यदि रत्नोंसे भर दिया हो तो उसकी रक्षा कौन कर सकेगा?
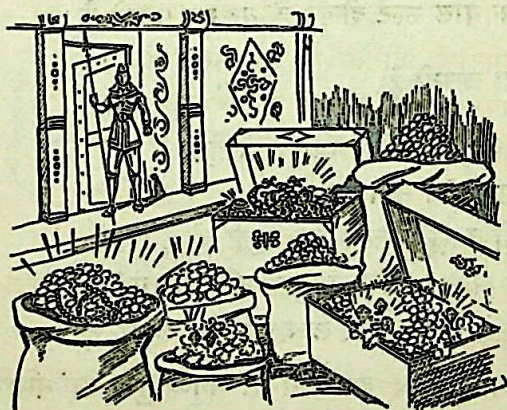
जहाँ सम्पत्ति होती है, वहाँ अभिमान भी आता है, चिन्ता भी।[2]

सत्य मीठा भी : कठोर भी

पृथ्वीपर पानी-सा सौम्य कौन है?
पृथ्वीपर पानी-सा नम्र कौन है?

१, २. ताओ उपनिषद् ३८; ९

किन्तु कड़ी-से-कड़ी और मजबूत-से-मजबूत चीजको गलानेवाला, घिसानेवाला पानीसे बढ़कर कौन है ?

इसका कोई विकल्प नहीं।
दुनिया जानती है कि मुलायम कठोरको घिसा सकता है।
कमजोर बलवानको जीत सकता है।
पर इसका ऐसा एक भी उदाहरण कहाँ है ?
तभी तो तत्त्वदर्शी कहता है :
"जो देशके कड़े बोल सहता है, वही देशका स्वामी है।
जो जनताके दुःख सहता है, वही सच्चा राजा है।"
सत्यके बोल उल्टे दीखते हैं, यह गूढ़ पहेली है।[१]

प्रेमकी सत्ता चलती है

मान और अपमान भयरूप ही है।
अपमान माने मानभंग।
वह हो न हो, उसका भय रहता ही है।
वैभव और विपत्ति देहधारी ही भोगता है ।
उनमें अभिमान और लज्जाका भय रहता ही है।

अकस्मात् भाग्य जग जाय तो मनुष्य कुछ देर संसारपर शासन चला सकता है।

किन्तु सदा यदि किसीका शासन चल सकता है, तो वह है प्रेम-बलका ही।[२]

१, २. ताओ उपनिषद् ७८; १३

आँख कान मुँह बन्द करो

ज्ञानी ताओके बारेमें विवाद नहीं करता।
जो विवाद करते हैं, वे ताओको जानते ही नहीं।
मुँहको बन्द रखना,
आंखें मूंद लेना, कान मूंद लेना,

इन्द्रियोंका संयम करना,
कोना-कोना सीधा कर लेना,
तड़क-भड़क छोड़ देना,
सिधाई और सादगी अपना लेना,
धूलकी तरह नम्र बन जाना—
इसका नाम है अगाध धर्म।
ऐसे आदमीके लिए बोलना या न बोलना,

दया या आघात, मान या अपमान एक-से हैं।
इसीलिए सब उसका आदर करेंगे।[१]

सुखी रहनेका साधन

आप मुँह बन्द करें, आँखें और कान भी बन्द करें,
जन्मभर आपको कोई उपद्रव न होगा।
किन्तु यदि आप मुँह खोलेंगे या चालाकी दिखायेंगे तो जन्मभर दुःख झेलेंगे।[२]

अपने मुँह मियाँ मिट्ठू मत बन

अंगूठेपर खड़े रहकर आदमी स्थिर नहीं रह सकता।
अपना बड़प्पन दिखानेसे किसीकी शोभा नहीं बढ़ती।
अपनी प्रशंसा आप करनेसे किसीका आदर नहीं होता।
सबलोग इससे घृणा करते हैं।
ताओवाला मनुष्य उसके पास नहीं फटकता।[३]

शान्तिमें ही सुख : ५ :

आपके अधिक निकट क्या है—नाम या शरीर ?
अधिक कीमती क्या है—देह या सम्पत्ति ?
अधिक बड़ा संकट क्या है—पाना या खोना ?
महान् भक्तिके लिए त्याग भी महान् चाहिए।
महान् सम्पत्तिमें महान् हानि छिपी रखती है।
जो संतुष्ट रहता है, उसका नाश नहीं होता।
जो शांत रहता है, उसपर कभी संकट नहीं आता।[४]

१, २, ३, ४. ताओ उपनिषद् ५६; ५२; २४; ४४

असन्तोष में ही दुःख

विषय-वासनामें रमनेसे बढ़कर कोई पाप नहीं।
असंतोषसे बढ़कर कोई दुःख नहीं।
लोभसे बढ़कर कोई अनर्थ नहीं।
संतोषमें शाश्वत सुख है।[1]

वासनाओंको झटक दे

अपनेमेंसे सब कुछ झटककर निकाल डाल,
बिलकुल रीता हो जा, कोरा हो जा।
तू जहाँ है, वहीं निश्चिन्त रह।[2]

आत्मसन्तोष

यदि मेरे पास छोटा-सा राज्य हो और उसमें दस बीस आदमी भी योग्यतावाले हों, तो मैं उनपर अपनी सत्ता नहीं चलाऊँगा।

मैं लोगोंको समझाऊँगा कि मौत दुःखद है। वे उससे मिलनेके फेरमें न पड़ें।

पासमें नावें हों, गाड़ियाँ हों, तो भी वे दूर देश नहीं जायेंगे।
बख्तर हो, तो उसे पहननेका कभी मौका न आये।
अपना मोटा-झोटा अन्न ही उन्हें मीठा लगे।
सादे कपड़े ही उन्हें भव्य लगें।
अपने घरों को ही वे विश्रामस्थल समझें।
मामूली सुख-सुविधामें ही आनन्द मानें।
पड़ोसी राज्य दिखाई दे,
वहाँके मुर्गोंकी बांग सुन पड़े,

१, २. ताओ उपनिषद् ४६; १६

कुत्तोंका भूकना सुन पड़े,
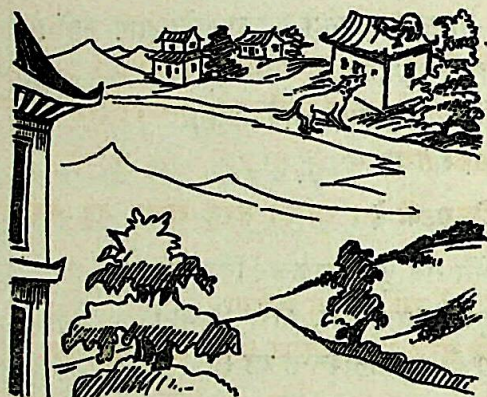
फिर भी हमारे लोग बूढ़े हो जानेपर भी पड़ोसी राज्योंसे व्यवहार-की आवश्यकता न मानें।

वे न तो वहाँ जायें, न उनपर हमला करें।[1]

ज्ञानी कैसा होता है ? : ६ :

लोगोंके बीच बड़प्पन दिखाना छोड़ दें, तो मत्सर रुकेगा।

दुर्लभ चीजोंका ज्यादा दाम लगाना छोड़ दें, तो चोरी रुकेगी।

इन्द्रियोंके विषयोंकी लालसा छोड़ दें, तो मन शान्त रहेगा।

ज्ञानी पुरुष इस तरह हृदयसे वासनाओंको हटाता है, पेटका उचित समाधान करता है,

स्नायुओंको आराम देता है, हड्डियोंको ठोस बनाता है,

दुनियाको अशुभके ज्ञानसे और उसकी चाहसे बचाता है,

---

१. ताओ उपनिषद् ८०

अशुभको जाननेवालोंके लिए उसके उपयोगसे डरनेकी योजना बनाता है।

इस तरह ज्ञानी पुरुष शासन किया करता है।

अकर्मसे वह कर्म करता है और उसीसे सबपर शासन करता है। [1]

ज्ञानी : बालककी तरह

पुरुष होकर भी जो स्त्रीकी तरह रहेगा, वह संसारको रास्ता दिखायेगा।

शाश्वत धर्म उसे कभी न छोड़ेगा।

बालककी तरह वह निष्कपट होगा, प्रसन्न होगा।

उजालेमें रहकर भी जिसकी प्रसिद्धि न हो, वह संसारके लिए आदर्श होगा।

शाश्वत धर्म उसे कभी न छोड़ेगा।

वह पूर्णताकी ओर जायगा।

---

१. ताओ उपनिषद् ३

वैभववाला होकर भी जो नम्र रहेगा, वह संसारकी समृद्धिका आधार होगा।

शाश्वत धर्म उसे कभी न छोड़ेगा।

वह मूलतत्त्वमें विलीन हो जायगा।

इसी तत्त्वमेंसे असंख्य जीवन-घट बनते हैं।

ज्ञानी उससे एकरूप होकर सबका उत्तम शासक बनता है।

उदार राज्य वह है, जो न तो किसीका अपमान करता है, न किसीका दिल दुखाता है।[1]

ज्ञानी : आत्माकी चिन्ता करता है

प्रकाश मनुष्यको अन्धा बना देगा,
शब्द उसे बहरा बना देगा,
स्वाद उसकी जीभको बेस्वाद बना देगा,
शिकार उसे जंगली बना देगा,
बहुमूल्य वस्तुएँ उसे लोभमें डाल देंगी।
प्रतिष्ठा और लज्जा उसे भयभीत बना देगी।
इन दोनोंको भयसे कभी छुटकारा नहीं मिल सकता।
यही कारण है कि ज्ञानी मनुष्य आत्माकी चिन्ता करता है, इन्द्रियोंकी नहीं।

वह एककी तरफ रत्तीभर ध्यान नहीं देता, दूसरेकी तरफ पूरा-पूरा ध्यान देता है।[2]

ज्ञानी : सबसे प्रेम करता है

जो अपनेको अनुरूप बना लेगा, उसकी अन्ततक रक्षा होगी।

१, २. ताओ उपनिषद् २८; १२

जो अपनेको झुका देगा, वह सरल होगा।
जो अपनेको खाली करेगा, वह परिपूर्ण होगा।
जो अपनेको नम्र बनायेगा, वह ऊँचा चढ़ेगा।
इसलिए ज्ञानी सरलताका ही पल्ला पकड़ता है।
वह अपना प्रदर्शन नहीं करता, इसीसे चमकता है।
वह अपनी प्रशंसा नहीं करता, इसीसे दूसरे उसकी प्रशंसा करते हैं।
वह शून्य होता है, इसीसे उसका आदर होता है।
वह पागल नहीं होता, इसीसे उसका सम्मान होता है।
वह होड़ नहीं करता, इसीसे उसका कोई वैरी नहीं होता।
निश्चय ही वह शान्तिके धामको जाता है।[1]

ज्ञानीकी सरलता

तड़पन भरे शब्द लच्छेदार नहीं होते।
लच्छेदार शब्द विश्वासलायक नहीं होते।
ताओवाला व्यक्ति विवाद नहीं करता।
विवाद करनेवाले ताओको जानते नहीं।
ज्ञानी संग्रह नहीं करता।
दूसरों पर जितना खर्चता है, उतना अपने लिए पाता है।
दूसरोंको जितना देता है, उतना उसके पास रहता है।
ताओ सबको समेटे है, पर कष्ट किसीको नहीं देता।
सहज कर्म करनेवाले ज्ञानीका यही ताओ है।[2]

१, २. ताओ उपनिषद् २२; ८१

धर्मशील पुरुष राष्ट्रपर शासन करे।

व्यूह-विद्यामें निपुण व्यक्ति सेनापति बने।

व्यवहार-साधनोंसे जो अलिप्त हो, वह राजा बने।

अनुभव ऐसा है कि जब निरोधक कानून लोक-व्यवहारपर अंकुश लगाते हैं, तो देश गरीब होता जाता है।

जब हथियारोंकी खुली छूट दी जाती है, तो सरकार खतरेमें पड़ जाती है।

लोग जितने ही धूर्त बनते हैं, बनावटी बातें बढ़ती हैं।

हाथ-सफाईका सम्मान होता है, तो दगाबाजोंकी बन आती है।

तभी तो ज्ञानी कहता है :

मैं योजनाओंके पीछे न पड़ूँगा। लोग खुद राह खोज लेंगे।

मैं शान्त रहूँगा। लोग खुद आसरा खोज लेंगे।

मैं अपना मत सुनाऊँगा। लोग खुद उसे मान लेंगे।

मैं महत्त्वाकांक्षा न रखूँगा। लोग खुद सरलताकी ओर लौटेंगे।[१]

लोग खुद अपना सुधार करें

स्वतंत्र और उदार सरकार लोगोंको मौका देती है कि वे खुद अपना विकास करें।

अत्याचारी और शोषक सरकार लोगोंको बन्धनमें डालती है, उन्हें दुःखी करती है।

ज्ञानी पुरुष सत्यशील होता है, दूसरोंको तराशता नहीं, खोदता नहीं।

वह न्यायी होता है, सीधा होता है, ज्ञानी होता है।

वह सहिष्णुता बरतता है, दूसरोंको चेतावनी नहीं देता।

वह अपने तेजसे दूसरोंको चकाचौंध नहीं करता।[२]

१, २. ताओ उपनिषद ५७ : ५८

युद्ध करना गलत

हथियार चाहे जितने नक्काशीदार हों,
वे सुखके साधन नहीं हो सकते।
उल्टे, उनसे सभीको डर लगता है।
इसलिए ताओवाला मनुष्य उनसे दूर रहेगा।
हथियार अशुभसूचक हैं।
ज्ञानी पुरुष उनका उपयोग नहीं करते।
लाचारीकी बात दूसरी है।
ज्ञानीकी प्रबल इच्छा होती है शान्तिकी।
विजय पानेमें उसे प्रसन्नता नहीं होती।
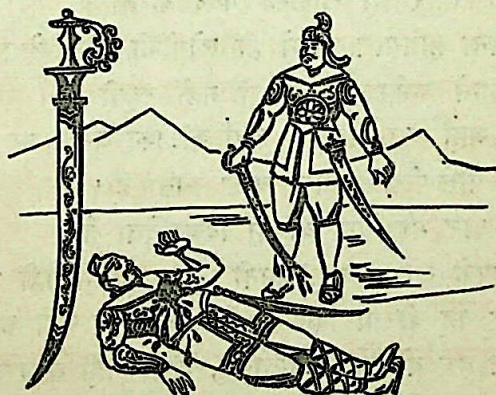
विजयमें खुश होना रक्तपातपर खुश होना है।
रक्तपातमें जो खुश होता है, वह शासन करने लायक नहीं है।

१. ताओ उपनिषद ३१

समझौता

झगड़ेके बाद समझौता कर लेते हैं।

समझौतेमें एक पक्षका जी कसकता रहे, तो उसे अच्छा निर्णय कैसे कह सकते हैं ?

तभी तो ज्ञानी पुरुष समझौते का अपने विषयका अंश मान लेता है। पर, दूसरेके बारेमें हठ नहीं करता।

सच्चा आदमी समझौतेकी अपनी शर्तें निभाने पर ध्यान देता है।
अनाचारी केवल अपना स्वार्थ देखता है।
ताओ किसीका पक्षपात नहीं करता।
वह सदा सज्जनोंकी सहायता करता है।[१]

वीर वह है

ताओके सहारे जो राजाकी मदद करता है,
वह बिना हथियार उठाये ही लोगोंको जीत लेता ह !
उसे अपने कर्मफलकी चिन्ता नहीं रहती।
सैनिक जहाँ डेरा डालते हैं, वहाँ काँटोंका जंगल लग जाता है।
सेनाके पीछे-पीछे अकाल चला आता है।
सच्चा वीर मौके पर वीरता दिखा देता है,
अधिकारके लोभसे वह अपनी जान खतरेमें नहीं डालता।
मौकेपर वह वीरता दिखाता है, अत्याचार नहीं करता।
मौकेपर वह वीरता दिखाता है, शेखी नहीं बघारता।
मौकेपर वह वीरता दिखाता है, मतवाला नहीं बनता।
मौकेपर वह वीरता दिखाता है, दीन नहीं बनता।
मौकेपर वह वीरता दिखाता है, आवेश में नहीं आता![२]

१, २. ताओ उपनिषद् ७९; ३०

लड़ाई मिटानेका धर्म

: ९ :

अच्छा सेनापति मतवाला नहीं होता।
अच्छा वीर आवेशमें नहीं आता।
सर्वश्रेष्ठ विजेता लड़ाई नहीं लड़ता।
समझदार मालिक उदारतासे राज चलाता है।
वह अपना बड़प्पन भुला देता है।
यह है लड़ाई मिटानेका धर्म !
हृदय-परिवर्तनका धर्म !
इसमें दिव्यता है।
पुराने लोगोंका सबसे ऊँचा लक्ष्य यही था।[1]

---

१. ताओ उपनिषद् ६८

: ४ :

च्युअंगत्सीने कहा है

लाओत्सेके उपदेशों का सबसे अधिक प्रचार और भाष्य किया है, च्युअंगत्सीने ।

एक दिन च्युअंगत्सी अपने तालाब पर बैठा मछली पकड़ रहा था । खूके कुछ सरकारी अधिकारी उसके पास आकर लगे उसकी तारीफ करने। उन्होंने उससे कहा: 'चलिये, हम आपकोऊँचा सरकारी पद दें ।'

च्युअंगत्सीने उनसे कहा : 'तुम्हें तीन हजार साल पहलेके उस पवित्र केंकड़ेकी कहानी मालूम है न, जिसे एक राजाने अपने पुरखोंकी समाधिपर एक सन्दूकमें बन्द करके रख छोड़ा था ?'

वे बोले : 'हाँ ।'

च्युअंगत्सीने पूछा : 'वह वहाँ मरा पड़ा है, यह अच्छा है, या यह अच्छा होता कि वह कीचड़में अपनी पूँछ डुलाता घूमता ?'
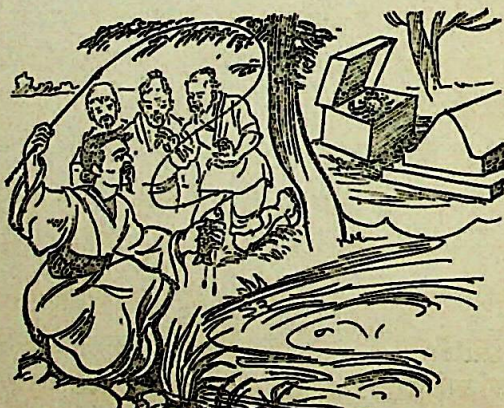
वे बोले : 'अच्छा तो यही होता कि वह कीचड़में अपनी पूँछ डुलाता घूमता ।'

च्युअंगत्सी : 'तो आप भी अपना रास्ता पकड़िये। मैं भी अपने तालाबके कीचड़में पड़ा रहना अच्छा मानता हूँ ।'

च्युअंगत्सीकी पत्नीके मरनेपर हुईत्से गया समवेदना प्रकट करने। देखा, वह तो बाजा बजाकर गा रहा है। 'ऐसा क्यों ?' पूछने पर च्युअंगत्सी बोला : 'ऋतुएँ जैसे बदलती हैं, उसी तरह शरीर बदलता है, चोला बदलता है। इसमें रोनेकी क्या बात है ?'

मान-अपमानको समान मानो : १ :

कूके राजा क्वांगने सुन शू आओको तीन बार अपने राज्यका प्रधानमंत्री बनाया और तीनों बार निकाल दिया।

कीन वूने सुन शू आओसे पूछा : 'हुजूर, आप तीन बार प्रधानमंत्री बनाये गये, उससे आपको खुशी नहीं हुई। आप तीन बार प्रधानमंत्रीके पदसे बर्खास्त किये गये, उससे आपको दुःख नहीं हुआ। पहले मेरे मनमें आपके बारेमें कुछ सन्देह था, पर अब ऐसा नहीं है। मैं देखता हूँ कि आपके नथुनोंसे आपकी साँस कैसे नियमित रूपसे और शान्तिपूर्वक आती-जाती है। अपने मन पर ऐसा नियंत्रण आप किस तरह रख पाते हैं ?'

सुन शू आओ बोले : 'इसमें और लोगोंसे मेरी कौनसी विशेषता है ? मुझे जब प्रधानमंत्रीका पद सम्हालनेके लिए कहा गया, तो मैंने सोचा कि उसे अस्वीकार करना ठीक न होगा। जब वह पद मुझसे छीन लिया गया, तो मैंने सोचा कि उसे जबरन रोककर नहीं रखा जा सकता। मैंने विचार किया कि प्रधानमंत्रीके पदके आने या जानेसे

मेरा कुछ बना-बिगड़ा नहीं। मैं जो था, सो ही बना रहा। उसने मुझे कुछ बनाया नहीं। तब इसमें दुःख मनानेकी कौनसी बात है ? और लोग भी ऐसा ही करते हैं। इसके अलावा, मुझे इस बातका भी पता नहीं कि यह सम्मान कुर्सीका था या मेरा ? यदि वह कुर्सीका सम्मान था, तो मेरे लिए उसका क्या महत्त्व ? यदि वह सम्मान मेरा था, तो उसका कुर्सीसे क्या लेना-देना ? यह सब सोचते हुए मैंने इसकी पर्वाह नहीं की कि लोग मेरा सम्मान करते हैं या मुझे बहुत नीच समझते हैं !'

अपने गुणोंका विकास करो : २ :

यांगत्सी गया था सुंग। वहाँ वह एक सरायमें ठहरा। सराय वालेके दो रखेलियाँ थीं। एक थी सुन्दरी, दूसरी थी कुरूपा।

तमाशा यह था कि जो कुरूपा थी, उसका सम्मान होता था। जो सुन्दरी थी, उसका अपमान।

यांगत्सीने इसका कारण पूछा तो घरके एक लड़केने बताया :

'सुन्दरीको इस बातका ज्ञान है कि वह सुन्दरी है। हम उसकी सुन्दरता माननेको तैयार नहीं। कुरूपाको अपनी कुरूपताका ज्ञान है। हम उसकी कुरूपता माननेको तैयार नहीं।'

यांगत्सी अपने चेलोंसे बोला: 'याद रखो मेरे बेटो! तुममें जो सद्गुण हों, उनके अनुसार चलो, पर उनका घमण्ड भूल कर न करो। नहीं तो कोई भी तुम्हें प्यार न करेगा।'

पैसेवालोंकी दुर्दशाएँ : ३ :

असंतोषी महोदय संतोषीसे पूछते हैं: 'दुनियामें ऐसा कौन है, जो प्रशंसा और वैभव नहीं चाहता? माना कि लोग वैभव और विलासिताकी निन्दा करते हैं, पर उसकी इच्छा किसे नहीं सताती?'

सन्तोषी: 'ज्ञानी पुरुष जो भी काम करता है, उसका उद्देश्य होता है, दूसरोंका भला। वह ईमानदारीसे काम करता है और मात्राके भीतर रहता है। उसे काम भरको मिल जाता है, तो वह अधिककी इच्छा नहीं करता। आवश्यकता भरके लिए भरपूर प्रयत्न करेगा, पर उसके मनमें लोभ नहीं रहेगा। वह राजगद्दी तकको ठुकरा देगा।'

असन्तोषी: 'अभावोंमें रहकर जीनेमें कोई लाभ है?'

सन्तोषी: 'अपरिग्रहमें, शान्तिमें सुख है। जहाँ बहुत वैभव होता है, वहाँ दुःख भोगना पड़ता है। धनी आदमियोंके कान तरह-तरहके बाजोंकी ध्वनिसे भरे रहते हैं। उनके मुँह मांस-मदिरासे भरे रहते हैं। उनकी कामनाओं की पूर्ति इस हदतक होती है कि वे अपना उचित काम-धाम तक भूल जाते हैं। उनकी हालत अव्यवस्थाकी हालत कही जा सकती है।

'वे अपने वैभवमें ही डूबे रहते हैं। उनकी हालत उस आदमीकी

तरह कही जा सकती है, जो ऊँचाई पर चढ़ रहा हो और पीठपर भारी बोझा लादे हो। उनकी यह स्थिति बड़ी पीड़ादायक कही जा सकती है।
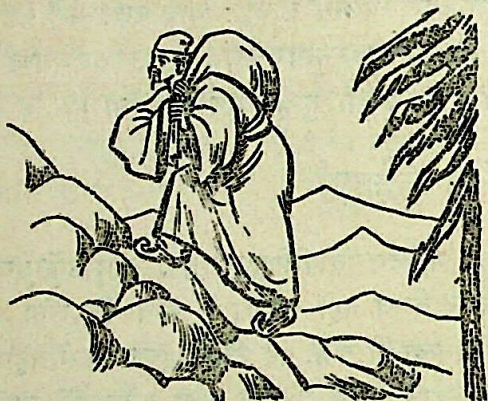
'उनके मनमें वैभवकी तृष्णा रहती है। सोचते हैं कि अधिक धन मिलेगा तो भोग-विलासके और अधिक साधन मिलेंगे। वे सत्ता भी हथियानेको लालायित रहते हैं। एकान्तमें वे भोग-विलासमें डूबे रहते हैं। हर चीजका वे घमण्ड करते हैं। उनकी यह स्थिति बीमारकी-सी है।

'धनवान् बनने और मुनाफा कमानेकी इच्छासे वे अपना गोदाम भरते रहते हैं। कुछ भी कहा जाय, पर वे अपना रास्ता नहीं छोड़ते। उनका यह व्यवहार लज्जाजनक कहा जा सकता है।

'उनके पास सम्पत्तिका इतना ढेर लग जाता है कि वे उसका उपयोग नहीं कर पाते। वे उसे अपनी छातीसे चिपकाये रहते हैं और किसी तरह छोड़ना नहीं चाहते। 'और और' की हविस उनमें भरी रहती है। उनकी यह स्थिति दुःखमयी कही जा सकती है।

'घर पर उन्हें चोरोंका और बाहर डकैतोंका डर रहता है। घरमें वे बहुतसे कमरोंके भीतर रहते हैं, बाहर वे अकेले जानेमें काँपते हैं। उनकी यह स्थिति सतत चिन्ताजनक कही जा सकती है।

'पैसेवालोंकी ये छहों स्थितियाँ बड़ी दुःखद हैं। पर, वे लोग इन्हें भूल जाते हैं। वे अपना विवेक खो देते हैं। अपनी सारी सम्पत्ति देकर भी वे एक दिनके लिए भी शान्ति नहीं पा सकते। कैसी शोचनीय स्थिति है यह !'

गरीबी की मस्ती : ४ :

युआन सीन लूमें रहता था। उसकी घासकी बनी झोपड़ीमें मिट्टीके मटकोंकी बनी खिड़कियाँ थीं। छप्परसे पानी टपकता तो फर्श गीला बना रहता। पर युआन सीन उस सीलनमें भी मस्तीसे बैठकर गुइटार–सितार–बजाया करता।

त्सी कुंग दो घोड़ोंकी शानदार बग्घीमें बैठकर उससे मिलने गया। बग्घीका युआन सीनकी गलीमें घुसना कठिन था। इसलिए वह पहले ही उतर गया।

युआन सीनने दरवाजे पर आकर उसका स्वागत किया। उसके सिर पर थी छालकी टोपी, पैरमें बिना एड़ीके जूते और हाथमें था एक डण्डा।

त्सी कुंग बोला : 'ओह, स्वामी, आप कितने कष्टमें रहते हैं! इतनी मुसीबतमें! इतने संकट में!'

युआन सीनने कहा : 'मैंने सुना है कि पैसे न होनेसे आदमी गरीब होता है, पर अपने ज्ञानको अमलमें न लानेसे आदमी दुःखी होता है। मैं गरीब हूँ, दुःखी नहीं।'

त्सी कुंग युआनकी बात सुनकर सकुचा गया। उसे बड़ी झेंप लगी। इस पर युआन हँस पड़ा। बोला :

'दुनियाकी प्रशंसाकी दृष्टिसे कोई काम करना, नम्रता और सदाचारके चोगेमें अपनी दुष्टता छिपाना, अपने रथों और घोड़ोंका प्रदर्शन करना—ऐसी बातें करना युआनको बर्दाश्त नहीं!'[१]

---

१ 'दी टैक्स्ट्स ऑव ताओइज्म' से।

त्सू कुंग पूछता है :

"एक शब्दमें बताइये, मनुष्य का कर्तव्य क्या है ?"

कांगफ्यूत्सी कहता है :

"भाईचारा, प्रेम !

मत करो दूसरोंके साथ वैसा व्यवहार, जैसा कि तुम नहीं चाहते कि वे तुम्हारे साथ करें ।"

: १ :

कांगफ्यूत्सी
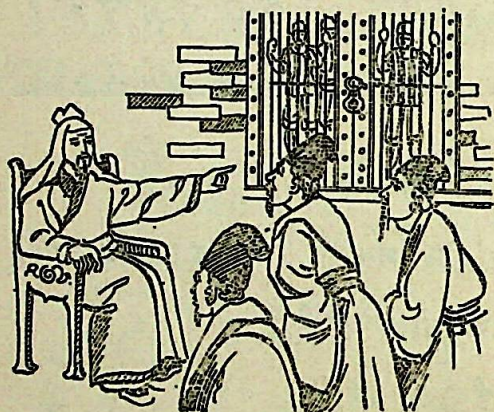
'तुम्हें पता है कि जेलोंमें बन्द अपराधी कौन हैं ?'

'नहीं हुजूर ।'—जजों, वकीलों और पहरेदारों ने कहा ।

'मैं वताऊँ ? ये बेचारे गरीब लोग हैं। अगर खुद गरीव नहीं हैं, तो गरीबोंकी सन्तान हैं। इतना ही नहीं, इन्हें कोई ज्ञान नहीं है। ये मूर्ख हैं और मूर्ख माता-पिताओंकी सन्तान हैं!'

'तव, हुजूर ?'

'गरीवी और मूर्खता—ये ही दो कारण हैं, जिनकी वजहसे आदमी अपराध करता है। देशकी गरीवी दूर कर दी जाय और अज्ञान मिटा दिया जाय तो अपराधोंका नाम नहीं रहेगा।'

'पर इसका उपाय क्या है, हुजूर ?'

'उपाय है ज्ञानका प्रचार करना, शिक्षाका प्रचार करना। सब लोग शिक्षित हो जायेंगे तो अपराध अपने आप कम हो जायेंगे।'

'और गरीबी कैसे मिटेगी, हुजूर ?'

'वह मिटेगी उद्योग-धन्धे फैलानेसे, तरह-तरहकी कलाओंका विस्तार करनेसे। उसी तरहकी शिक्षा देनेसे। हर आदमीको काम मिले और शिक्षा मिले, तो अपराध मिटते देर नहीं लगेगी। आदमी अच्छा बन जायगा।'

'यह कैसे होगा, हुजूर ?'

'होगा कैसे ? आप लोग शासक हैं। आप लोग अफसर हैं। सरकार हैं। आपको चाहिए कि लोगोंको अच्छा बनायें। पर, दूसरों-को अच्छा बनानेके लिए एक बात सबसे जरूरी है।'

'वह क्या, हुजूर ?'

'वह यह कि सबसे पहले आप अच्छे बनिये। आप अच्छे होंगे तो आपकी नकल करनेवाली जनता भी अच्छी होगी। अफसर लोग भ्रष्ट होंगे तो जनता को भी भ्रष्ट होते देर न लगेगी।'

'हम लोग कैसे अच्छे बनें ?'

'उसके लिए आप एक ही बात याद रखिये। दूसरोंके लिए वह काम हर्गिज न करिये, जो आप अपने लिए पसन्द न करें।'

चीनके लू प्रदेशके मंत्री कांगफ्यूत्सीने अपराध-मंत्री बननेके बाद जेलोंका मुआइना किया, कैदियोंसे बातें कीं, उनकी हालतपर विचार किया और उसके बाद अफसरोंको बुलाकर ऊपरकी बातें कहीं।

नतीजा ?

नतीजा यह हुआ कि दो सालके भीतर जेलखाने खाली हो गये,

अदालतें सूनी हो गयीं। जजोंके पास काम नहीं रहा। वकील बैठकर मक्खी मारने लगे।

लू प्रदेशमें न अपराधी रहे, न अपराध।

ऐसा था कांगफ्यूत्सी, योग्य और समझदार शासक।

जन्म और बचपन

चीनमें लू नामका एक प्रदेश है। आज उसे शांतुंग कहा जाता है। वहाँ एक गाँव था त्सौ। वहाँ शंग-वंशमें ईसासे ५५१ साल पहले कांगफ्यूत्सीका जन्म हुआ।

पिता त्सौके शासक थे। सात फुट लम्बे मोटे-तगड़े भीमकी तरह। ७० सालकी उम्र, ९ बेटियाँ, बेटा एक भी नहीं। बहुत दु:खी रहते। बड़ी मनौतीके बाद कांगफ्यूत्सी पैदा हुए। जन्मके समय उनके कान बड़े-बड़े थे। लोग ऐसा मानते हैं कि बड़े कानवाले लोग बुद्धिमान् होते हैं।

तीन साल बाद पिताका देहान्त हो गया।

घरकी हालत अच्छी नहीं थी। फिर भी माँने किसी तरह उन्हें पाल-पोसकर बड़ा किया, पढ़ाया-लिखाया।

बुद्धि तेज थी। बचपनसे ही उनकी बुद्धिमत्ताकी ख्याति होने लगी। उन्होंने संगीत भी सीखा, धनुष-बाण चलाना भी।

नौकरी

उन्नीस वर्षके हुए, तभी उन्हें सरकारी भण्डारीकी नौकरी मिल गयी। विवाह भी हो गया। साल भर बाद वे पिता बन गये।

कांगफ्यूत्सी मन लगाकर काम करते। उनके कामसे अधिकारी खुश रहते। कुछ दिनोंमें वे खेतोंके निरीक्षक बना दिये गये।

नौकरी करते हुए भी वे इतिहास, कविता और संगीतका अध्ययन करते रहे। शामको उनके घरपर बैठक होती। लोग आते, तरह-तरहके सवाल पूछते। वे अपनी बुद्धिके अनुसार उत्तर देते। जो बात न जानते, उसके बारेमें साफ कह देते कि मैं नहीं जानता।

तेईस सालके जब हुए, तो माँ मर गयी। तीन साल तक प्रथाके अनुसार कामधाम छोड़कर शोक मनाते रहे।

विद्यालय

बादमें सरकारी नौकरी न करके अध्यापक बन गये।

चौंतीस सालकी उम्रमें एक विद्यालय खोला। कहते हैं कि उसमें ३००० विद्यार्थी शिक्षा पाते थे।

मंत्रीका पद

बावन सालके हुए, तो लोगोंने बहुत आग्रह करके उन्हें चुंग तूका शासक बना दिया। उन्होंने बड़ी अच्छी तरह शासन किया। प्रजा सुखी हुई।

लूके राजाने उन्हें बुलाकर पूछा: 'आपने कैसे शासन किया?'

बोले: 'मैंने अच्छोंको इनाम दिया, बुरोंको दण्ड। गुणियोंका संग्रह किया। विद्यार्थियोंके साथ बेटों जैसा व्यवहार किया। लोगोंने गुणियोंका अनुकरण किया। सभी अच्छे बन गये। सुखी हो गये।'

राजाने कहा: 'हमारे राज्यमें अपराध बहुत होते हैं। मैं चाहूँगा कि आप हमारे अपराध-मंत्री बन जायँ।'

कांगफ्यूत्सीने राजाकी बात मान ली और थोड़े ही दिनोंमें लू प्रदेशसे अपराध एकदम घट गये।

राजापर इसका अच्छा असर पड़ा। वह इनका भक्त हो गया। लूके अच्छे प्रबन्धसे पड़ोसी राज्य जलने लगे। उन्होंने राजाको

भोग-विलासमें डुबानेका षड्यंत्र रचा। राजा उसमें फँस गया। कांगफ्यूत्सी यह हाल देख मंत्रीपद छोड़ कर चल दिये।

निर्वासन

तेरह साल तक कांगफ्यूत्सी जगह-जगह भटकते रहे। उपदेश देते रहे। पत्नीका देहान्त होने पर वे घर लौटे। पुराना राजा मर चुका था। नये राजाने उन्हें अपना सलाहकार बनाना चाहा, पर वे बने नहीं।

सत्तर सालके हुए तो उनका बेटा मर गया। केह नामका उनका पोता था। वह योग्य निकला।

देहान्त

कोई ७३ सालकी उम्रमें ईसासे ४७८ साल पहले कांगफ्यूत्सीका देहान्त हुआ।

उनकी मृत्युके समाचारसे सारे चीनमें शोक मनाया गया।

सैकड़ों वर्षों तक उनके देशके लोग उनकी पूजा करते रहे। ईसासे १९५ साल पहले राजाकी ओरसे उनका सम्मान किया गया। उनकी आत्माकी शांति के लिए उनकी समाधि पर बलि चढ़ायी गयी। फिर तो सभी जगह उनका सम्मान किया जाने लगा।

जिन्दा रहते हुए न तो लाओत्सेको भरपूर सम्मान मिला, न कांगफ्यूत्सीको। मरनेके सैकड़ों साल बाद दोनोंकी पूजा हुई।

जियत न दीन्हे कौरा, मरे उठाये चौरा !

आज चीनमें इन दोनों महापुरुषोंकी पूजा की जाती है। उनके उपदेश अमर हैं।

: २ :

कन्फ्यूश धर्म

कांगफ्यूत्सी न तो धार्मिक नेता थे, न कोई भारी उपदेशक। न उन्होंने कोई नया दर्शन उपस्थित किया, न कोई नया धर्म। न तो उन्होंने कहा कि मैं देवदूत या पैगम्बर हूँ, न यही कहा कि मुझे ईश्वरसे कोई सन्देश मिला है। 'मैं संसारको कोई नयी विचारधारा दे रहा हूँ', ऐसा भी उन्होंने नहीं कहा।

फिर भी मरनेके हजारों साल बाद लोग उन्हें देवताकी तरह पूजते हैं।

मानवीय गुणोंपर जोर

कांगफ्यूत्सीने मानवीय गुणोंपर सबसे अधिक जोर दिया। वे चाहते थे कि विवेक, न्याय, सरलता, सत्य, सबका हित, सबका कल्याण, सद्‌वृत्ति आदिका विकास हो। वे मानते थे कि इन सब चीजोंका भरपूर विकास होनेसे ही समाज सुखी और प्रसन्न हो सकता है।

वे मानते थे कि जन्मसे सभी मनुष्य अच्छे होते हैं। उनमें सद्‌गुणोंके विकासका ठीकसे प्रयत्न हो, तो वे निश्चय ही अच्छे बन जायेंगे। इसके लिए अच्छी शिक्षा चाहिए, अच्छा अध्ययन।

पाँच मुख्य बातें

कांगफ्यूत्सीने ५ बातोंपर मुख्य रूपसे जोर दिया है :

१. **प्रेम** : सभी गुणोंका मूल है ।

२. **न्याय** : सभीको उचित स्थान मिलना आवश्यक है ।

सब अपने कर्तव्योंका ठीकसे पालन करें, तभी अपने अधिकारोंका उपयोग कर सकेंगे ।

३. **नम्रता** : कर्तव्य और अधिकार तभी मिल सकेंगे, जब हृदयमें नम्रता होगी ।

४. **विवेक** : भला क्या है, बुरा क्या है—इस बातका सदा विवेक करना आवश्यक है । जो अच्छा हो, उसे ग्रहण करें । जो बुरा हो, उसे छोड़ दें ।

५. **ईमानदारी** : सचाई और ईमानदारी सभी सद्गुणोंकी आधारशिला है । वह व्यक्तिगत जीवनमें भी जरूरी है, सामाजिक जीवनमें भी ।

मूल सूत्र

कांगफ्यूत्सीका, कनफ्यूश धर्मका मूल सूत्र है :
'तुम्हें जो चीज नापसन्द है, वह दूसरेके लिए हर्गिज मत करो ।'
वही मनु महाराजका सूत्र :

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् ॥

: ३ :

कांगफ्यूत्सीने कहा है

सबसे प्रेम करो : १ :

'गुरुजी, जीवनकी मूल बात क्या है ?'

कांगफ्यूत्सी : 'बेटा, प्रेम !'

'प्रेम क्या है, गुरुजी ?'

'हर मनुष्यको सच्चे-दिलसे चाहना, हर आदमीसे प्रेम करना। इसीका नाम है—प्रेम !'

'परन्तु हम प्रेम करें कैसे !'

'हम कर्मपर अधिक ध्यान दें, बजाय उसके फलके। इसका नाम है, प्रेम। काम करनेका अपना एक आनन्द होता है। उस आनन्दके लिए हम काम करें। उसका फल क्या होगा, इसकी हम चिन्ता न करें। इसीको हम प्रेम कह सकते हैं। भला काम हम इसलिए करें कि वह भला है। उसे हम इसलिए न करें कि उसके करनेसे हमें इस जीवनमें अच्छा फल मिलेगा या बादके जीवनमें अच्छा फल मिलेगा। भला काम करनेमें जो आनन्द मिलता है, उस आनन्दको पानेके लिए हम काम करें। इसका नाम है, प्रेम करना।'

'प्रेमका फल क्या मिलता है ?'

'प्रेम अपने आपमें ही अपना फल है। प्रेमसे सभी चीजोंमें सुन्दरता आ जाती है। जिस चीज को देखते हैं, वही सुन्दर दिखने लगती है। प्रेमसे शान्ति मिलती है। प्रेमकी बाजी लगी हो, तो भले

ही बड़ी भारी सेना तुम्हारे सामने खड़ी हो, तुम कतई मत झुको, मेरे बेटे !'

कांगफ्यूत्सी थोड़ी देर सोचते रहे। फिर बोले : 'बेटा, जिसके हृदयमें प्रेम भरा रहता है, वह कभी कोई गलत काम कर ही नहीं सकता। वह कभी किसीकी बुराई चेत ही नहीं सकता। जीवनका सार है, प्रेम। भला वह भी कोई जीवन है, जिसमें प्रेम न हो ? बिना प्रेमके जीवनका नाम है, मृत्यु।'

सचाईका पालन करो : २ :

मनुष्यको सचाई और सरलताके साथ अपनेको सुधारनेकी कोशिश करनी चाहिए।

जो गुण अपनेमें नहीं है, उसे दिखानेकी कोशिश करना ढोंग है। ऐसे ढोंगीके हृदयमें भला कभी सत्यकी प्रतिष्ठा हो सकती है ?

सच्चा मनुष्य कभी उद्विग्न नहीं होता। वह कभी परेशान नहीं होता।

सच्चा आदमी साहसी होता है। पर, हर साहसी आदमी सच्चा नहीं होता। साहस तो चोर-डाकुओंमें भी होता है, पर उन्हें कोई भला आदमी कहता है ?

सच्चा आदमी सदा कर्मठ होता है। जो कहता है, सो करता है। वह व्यर्थकी बकवाद नहीं करता। लोग उसका सम्मान करते हैं, पर इससे उसमें घमण्ड नहीं आता।

वचन दे देनेके बाद आदमीको उसे पूरा करना ही चाहिए। कभी उससे पीछे नहीं हटना चाहिए।

पहले अपना सुधार, फिर दूसरोंका : ३ :

जो आदमी खुद अपना सुधार नहीं कर सकता, उसे भला क्या अधिकार है कि वह दूसरोंके सुधारकी बात करे।

'आपु न जावैं सासुरे, औरनको सिख देइ !'

महापुरुष वही ह जो कहनेके पहले खुद ही करके दिखाता है। कथनीके बजाय करनी करता है। वह केवल वही बात कहता है, जो उसे करनी होती है। वह जाति और सम्प्रदायके झगड़ोंसे सदा दूर रहता है।

मनुष्यको केवल ज्ञान पानेके लिए ही इधर-उधर नहीं भटकना चाहिए। जो ज्ञान मिले, उसे जीवनमें उतारनेका भी उसे अभ्यास करना चाहिए।

कांगफ्यूत्सीने एक दिन येन हुईसे कहा : 'हुई, तुम्हारा परिवार गरीब है। तुम्हारी हालत भी अच्छी नहीं है। तुम ऊँचा सरकारी पद क्यों नहीं स्वीकार कर लेते?'

हुई बोला : 'गुरुजी, मुझे ऊँचा पद लेनेकी कोई इच्छा नहीं है। मेरे पास ५० एकड़ जमीन है अन्नके लिए, १० एकड़ जमीन है रेशम और सनके लिए। मुझे सितार बजानेमें और आपके सिद्धान्तोंका मनन करनेमें आनन्द आता है। मुझे उतना ही पर्याप्त है। मुझे ऊँचा दफ्तर नहीं चाहिए।'

कांगफ्यूत्सीने कहा : 'मैं बरसोंसे कहता आया हूँ कि जो आदमी भीतरसे ऊँचा उठा होता है, उसे जरूरत नहीं बाहरसे ऊँचा उठनेकी।

जिसका हृदय ऊँचे भावोंसे भरा है, उसे ऊँचे पदसे क्या लेना-देना। आज मैंने देखा कि मेरा शिष्य 'हुई' मेरी बातको अमलमें लाकर दिखा रहा है।'

महान् पुरुष कौन है ? : ४ :

महान् पुरुष वह है, जो पलभरके लिए भी सच्चे रास्तेको नहीं छोड़ता। चाहे जितना बड़ा दुःख पड़े, चाहे जैसी आपत्ति आये, वह अचल रहता है। वह कभी डिगता नहीं।

डर जिसे डराता नहीं, दुःख जिसे डिगाता नहीं, वह पुरुष महान् है।

महान् पुरुष वह है, जो कभी दूसरोंकी आलोचना नहीं करता। उसे दूसरोंमें गुण ही गुण दीखते हैं, दोष नहीं।

महान् पुरुष अपने स्वार्थके पीछे नहीं दौड़ता और सदाचारका सदा पालन करता है।

महान् पुरुष अपने कर्त्तव्यको पूरा करनेमें कभी प्रमाद नहीं करता। आलस नहीं करता।

उत्तम पुरुष वही है, जो सदा शुभ ही शुभ देखता है। शुभ ही शुभ करता है।

मनुष्यको छोटी बातों पर, तुच्छ बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। यदि वह उन्हींमें फँसा रहेगा, तो बड़े काम कब करेगा ? महान् कैसे बनेगा ?

बुद्धिमान् वह है : ५ :

केहने पूछा : 'दादा, बुद्धिमान् कौन है ?'

कांगफ्यूत्सी : 'बेटा, बुद्धिमान् वह है जिसका आचरण शुद्ध है, जो सही रास्तेपर चलता है, जो अति नहीं करता।'

'सही रास्ता क्या है, दादा ?'

'सही रास्ता है, सिर्फ उसी चीजकी इच्छा करना जो उचित है। सही रास्ता है, भलाईपर टिकना। सही रास्ता है, प्रेमका सहारा लेना।'

'अति न करनेका क्या अर्थ है, दादा ?'

'अति माने न बहुत कम, न बहुत ज्यादा। मध्यम मार्ग। न तो आदमी ऐसा करे कि बिलकुल चले ही नहीं, न ऐसा ही करे कि चलता ही चला जाय।'

लायक बेटा कौन ? : ६ :

एक दिन कांगफ्यूत्सी अपने कमरेमें बैठे लिख रहे थे। उनका पोता केह दबे पाँव आकर उनके कमरेमें खड़ा हो गया, चुपचाप।

लिख चुकने पर उन्होंने लम्बी साँस छोड़ी।

केह बोला : 'दादा, आपने लम्बी साँस क्यों छोड़ी ? क्या आप इसलिए दुःखी हैं कि आपका बेटा नालायक है ?'

कांगफ्यूत्सी चुप !

केह फिर बोला : 'दादा, क्या आप इसलिए दुःखी हैं कि पुराने संत-महात्माओंकी तुलनामें आप बहुत छोटे पड़ते हैं ?'

'बेटा !'

'हाँ, दादा !'

'तुमने मेरे मनकी बात कैसे जान ली ?'

केह बोला : 'मैंने आपको कहते सुना है कि पिता लकड़ी जुटाये

और बेटा यदि उस लकड़ीके बोझको न उठा सके, तो वह बेटा नालायक होता है !'

'तो ?'

'तो मेरे मनमें ऐसा विचार उठता है कि कहीं मैं नालायक न साबित होऊँ।'

कांगफ्यूत्सीके चेहरे पर सन्तोषकी रेखा खिंच गयी। बोले : 'बेटा, अब मुझे कोई दुःख नहीं रहा। मैं समझता हूं कि मेरी शिक्षा अच्छी तरह फले-फूलेगी।'

तीन तरहकी मित्रता : ७ :

मित्रता अच्छी भी होती है, बुरी भी ।
अच्छी मित्रता तीन तरहकी होती है ।
बुरी मित्रता भी तीन तरहकी होती है ।
सीधे-सच्चे आदमीसे मित्रता करना अच्छी मित्रता है ।
विश्वास-योग्य आदमीसे मित्रता करना अच्छी मित्रता है ।
अनुभवी आदमीसे मित्रता करना अच्छी मित्रता है ।
धूर्त-हठी आदमीके साथ मित्रता करना बुरी मित्रता है ।
बनावटी-नम्र आदमीके साथ मित्रता करना बुरी मित्रता है ।
चतुर-चालाक आदमीके साथ मित्रता करना बुरी मित्रता है ।

मनुष्य दुःखी क्यों है ? : ८ :

मनुष्यको दु:ख इसलिए होता है कि वह गुणोंको अपनाता नहीं । गुणोंको ग्रहण नहीं करता ।

मनुष्यको दु:ख इसलिए होता है कि वह अपने दोषोंको दूर नहीं करता । अपनी बुराइयोंको जानते हुए भी उन्हींसे चिपटा रहता है ।

मनुष्यको दु:ख इसलिए होता है कि वह अपने ज्ञानको कसौटी पर नहीं कसता । उसे जो जानकारी रहती है, उसकी परीक्षा नहीं करता ।

मनुष्यको दु:ख इसलिए होता है कि सही रास्ता बता दिये जाने-पर भी वह उसपर चलता नहीं । सत्पथको जान लेनेपर भी उसपर आगे बढ़ता नहीं ।

जीवनका आनन्द किसमें ? : ९ :

'जीवनका आनन्द किसमें है ?'

कांगफ्यूत्सी : 'जीवनका सच्चा आनन्द है सन्तोषमें। अपने कर्तव्योंको पूरा करनेमें। भले कामोंको पूरा करनेमें।

'खानेको मेरे पास हो मोटा अन्न। पीनेके लिए हो मेरे पास पानी और तकियेके लिए हो मेरे पास मेरी मुड़ी हुई कुहनी। फिर मुझे

और क्या चाहिए ? इससे बढ़कर जीवनका आनन्द और हो ही क्या सकता है ?'

परिवारमें प्रेम फैलाओ : १० :

मनुष्यको परिवारमें प्रेमका भरपूर विस्तार करना चाहिए।

माता-पिताका आदर करना चाहिए। उनकी भली-भाँति सेवा करनी चाहिए। जो सन्तान माता-पिताकी भरपूर सेवा करती है, उसे सब सुख मिलते हैं।

सन्तानका प्रेम, पत्नीका प्रेम, वीणाकी तरह, बाँसुरीकी तरह मीठा होता है। भाइयोंके स्नेहसे जीवनमें मधुरता आती है।

पति-पत्नी प्रेमके धागेमें बँधे रहते हैं। पति गाता है, पत्नी दुहराती है। वे प्रेमसे रहेंगे तो उनकी सन्तान भी अच्छी होगी, गुणी और सदाचारी होगी। नहीं तो वह नालायक निकलेगी। नालायक संतानोंसे सारा राष्ट्र पतनकी ओर चला जायगा।

पाँच सद्‌गुण : ११ :

सद्‌गुण पाँच हैं : १. जेन, २. चुन जू, ३. ली, ४. ते और ५. वेन। इनका अर्थ है—

१. हमारा आचार ठीक हो। हम सदाचारी हों। हम अपनेको काबूमें रखें।

२. हमारा व्यवहार ठीक हो। सब लोगोंसे हम अच्छा व्यवहार करें। हमारे दिलमें दया हो, करुणा हो, प्रेम हो।

३. हमारा ज्ञान ठीक हो। हममें विवेक हो। जो बात हमें ठीक जँचे, केवल वही करें।

४. हममें नैतिक साहस हो। हम अपने तईं ईमानदार रहें और पड़ोसीके तईं उदार। हर बातमें हम सच्चे रहें।

५. हम सदैव अपने गुणों पर डटे रहें। सबके प्रति दया बरतें। सबके प्रति उदारता बरतें। यह हमारे जीवनका स्वभाव बन जाय।

पाँच कर्तव्य : १२ :

जीवनमें इतने लोगोंका एक दूसरेसे सम्बन्ध आता है :

१. पति और पत्नीका।

२. सन्तान और माता-पिताका।

३. बड़े भाई और छोटे भाईका।

४. मित्र और मित्रका।

५. राजा और प्रजाका।

इन सबका एक-दूसरेके प्रति कर्तव्य है, प्रेम और सद्भाव रखनेका। अपने व्यवहारमें सबको एक-दूसरेके प्रति आदर और सम्मान रखना चाहिए, एक-दूसरेके लिए त्याग और बलिदान भी करना चाहिए।

इन सबके प्रति व्यवहार करनेमें ३ बातें रहनी चाहिए : (१) विवेक, (२) एक-दूसरेके कल्याणकी कामना और (३) साहस।

प्रेम, दया और उदारता बरतनेसे ही ये सम्बन्ध ठीक और अच्छे रहेंगे।

अच्छी सरकार : १३ :

त्जू निगने पूछा : 'गुरूजी, उत्तम शासन क्या है ?'

कांगफ्यूत्सी : 'बेटा, उत्तम शासनका मतलब है, सरकार प्रभावशाली हो।'

'सरकार प्रभावशाली कैसे होगी ?'

'सरकार प्रभावशाली तब होगी, जब जनताके भोजनका भरपूर प्रबन्ध हो, अस्त्र-शस्त्र हों और सरकारपर जनताका पूरा विश्वास हो।'

'इन तीन चीजोंमेंसे किसी एकको छोड़ना पड़े तो किसे छोड़ा जा सकता है ?'

'शस्त्र-अस्त्रको छोड़ सकते हैं।'

'यदि बची हुई दोनों चीजोंमेंसे किसीको छोड़ना पड़े तो ?'

'तो भोजनको छोड़ा जा सकता है।'

'क्यों ?'

'इसलिए कि अनन्तकालसे लोग मरते आये हैं। भोजन न मिलने-से कुछ लोग मर सकते हैं, पर जनताका विश्वास खो देनेसे तो सर्वनाश हो जायगा।'

'शासनका उद्देश्य क्या है?'

'शासनका उद्देश्य है, जनताका कल्याण। जनताकी उन्नति। राज्य जनताके लिए है, जनता राज्यके लिए नहीं है।'

नादानको दण्ड देना गलत : १४ :

'गुरुजी, दण्ड देना ठीक है?'

कांगफ्यूत्सी : 'बेटा, कानूनके साथ दण्ड लगा है। जनता सिर्फ कानूनसे नहीं चलती।'

'क्यों?'

'इसलिए कि दण्डसे कोई शान्ति कायम करना चाहे, तो नहीं कर पायेगा। जनता दण्डसे बचना चाहेगी और उसके लिए नैतिकताकी चिन्ता नहीं करेगी।'

'तब क्या किया जाय?'

'सद्गुणोंसे जनताको राह दिखानी चाहिए। जनता अपने-आप अपना सुधार कर लेगी। जनता पढ़ी-लिखी हो, समझदार हो तो उसे दण्ड देनेकी जरूरत ही न रहेगी। जो जानबूझकर अपराध करे, उसे दण्ड देना ठीक है। पर जो नादान है, उसे दण्ड देना गलत है। जो जानता नहीं, जिसे ज्ञान नहीं, जो अशिक्षित है, जिसे पता नहीं कि वह ठीक काम कर रहा है या गलत—ऐसे आदमीको दण्ड देना बिलकुल गलत है। नासमझको फाँसी देना सरासर अत्याचार है। जो नादानीमें पड़कर अपराध कर बैठता है, उसके लिए सिर्फ वही दोषी नहीं है; वे लोग भी दोषी हैं, जिन्होंने उसे मूर्ख बनाये रखा।'

युद्ध बुरी चीज है।
जो आदमी सेनामें भरती होता है, उसकी प्रतिष्ठा घटती है।
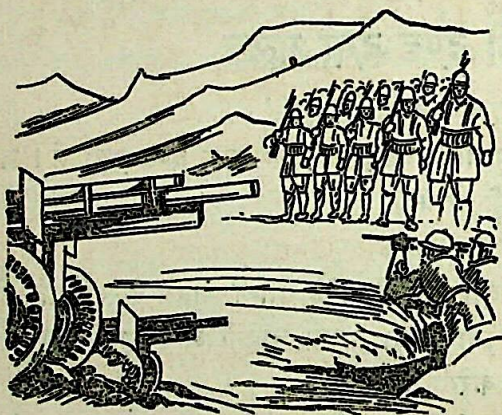
इससे शांतिमें और लोगोंके साथ मैत्रीके सम्बन्धोंमें बाधा पड़ती है।
युद्ध गलत है। युद्धके लिए सेनाएँ खड़ी करना गलत है।
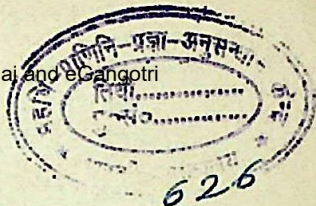
मैनशियसने कहा है

कांगफ्यूत्सीका सबसे प्रसिद्ध अनुयायी है, मैनशियस। उसने कांगफ्यूत्सीके विचारोंको सान चढ़ायी। ईसासे ३७२ साल पहले वह पैदा हुआ, २८९ साल पहले उसका देहान्त हुआ।

मैनशियस थोड़े ही दिन तक सार्वजनिक जीवनमें रहा। बादमें वह एकान्तमें जाकर रहने लगा।

पापोंसे अपनेको बचाओ

मैनशियस मानता था कि बाहरी दूषित वातावरणका असर आदमीपर पड़ता है, जिससे उसकी स्वाभाविक अच्छी प्रकृति बिगड़ जाती है। वह कहता है :

आदमीको वही काम करना चाहिए, जिससे दूसरे लोगोंका भला हो।

युद्ध करना गलत है। सेनामें भरती होना गलत है। सेनापति अपराधी हैं।

किसी प्रदेशपर लोगोंकी इच्छाके बिना कब्जा करना गलत है।

पाँच पाप

मनुष्यको ये पाँच पाप छोड़ देने चाहिए :

(१) माता-पिताके पालन-पोषणमें सुस्ती दिखाना या उससे हाथ खींच लेना,

(२) जुआ और शराब पीना,

(३) धन और सम्पत्ति को महत्त्व देना,

(४) शारीरिक भोग-विलास में पड़ना और

(५) निरर्थक वीरता दिखाना, युद्ध और झगड़ा करना।
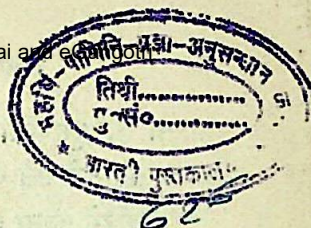
मोत्सूने कहा है

ईसासे कोई ५०० साल पहले चीनमें मोत्सू (मो ती) नामका विचारक हो गया है। वह प्रेमका पुजारी था। उसका कहना था कि हमारी सामाजिक समस्याएँ युद्धसे, शक्तिसे हल नहीं हो सकतीं। उसका एक ही उपाय है और वह है, प्रेम।

प्रेम ही एक उपाय

मोत्सू कहता है :

"एक राज्य दूसरेपर हमला करता है, एक-दूसरेको घायल करता है, एक दूसरेको नष्ट करता है, बर्बाद करता है। आज संसारका सबसे बड़ा दुर्भाग्य यही है।

सवाल है कि यह दुर्भाग्य आता कहाँसे है ?

वह आता है, एक-दूसरेके प्रति प्रेमभावकी कमीसे।

आज एक राज्य अपनेको ही प्यार करता है, दूसरोंको नहीं। अपने घरसे ही प्रेम करता है, दूसरेके घरसे नहीं। अपने ही लोगोंको

चाहता है, दूसरोंको नहीं। इसलिए दूसरे लोगोंको मारने, घायल करने, सतानेमें उसे संकोच नहीं होता।

संसारमें इतना लड़ाई-झगड़ा, राग-द्वेष, तनातनी क्यों है ?

इसीलिए कि हममें एक-दूसरेके प्रति प्रेम नहीं है।

इस हालतको बदलनेका उपाय क्या है ?

इसका उपाय यही है कि हम सारी दुनियासे प्रेम करें और सबकी बिना किसी भेदके सहायता करें।

सो कैसे ?

वह इस तरह कि दूसरोंको हम अपना ही मानें। अपने जैसा ही मानें। जब सब लोग इस तरह एक-दूसरेसे प्रेम करेंगे, तो न तो कोई किसीको दबायेगा, न कोई किसीको सतायेगा। तब न तो बलवान् दुर्बलको सतायेगा, न बहुमत अल्पमतको। न धनी निर्धनको सतायेगा, न सम्मानित असम्मानित को। कोई किसी को अपमानित नहीं करेगा।

प्रेम और केवल प्रेम ही एक उपाय है, संसारसे लड़ाई-झगड़ा, वैर-विरोध दूर करनेका।

इसलिए हर आदमी से प्रेम करो, फिर वह कहींका हो, कोई हो।"

स्वामी रामतीर्थने कहा है :

'लव लाइक लाइट एम्ब्रेसेज एवरीथिंग !' प्रेम तो प्रकाशकी भांति हर एकको अपने गले से चिपटा लेता है।

काश, हम ऐसा कर सकें !
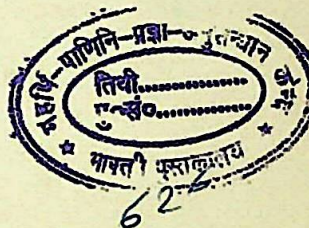
जो मूर्तिमान् धर्म बन गया, वह
छोटे [illegible]क जैसा होता है—
सरल, पवित्र और निष्कलंक।

—लाओत्से

जीवन का सारतत्त्व है प्रेम,
आधारशिला है सदाचार।

—कांगफ्यूत्सी